# अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

## कक्षा : सातवीं – जैन धर्म कोविद ( परीक्षा 13 जुलाई, 2025 )

समय : 3 घण्टे | उत्तरतालिका | अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) 'मर्दन करना' अर्थ का सूचक पद है-
(क) पहोयणा (ख) पलोयणा
(ग) संवाहणा (घ) पाहणा ( ग )

(b) 'विरेयणे' का अर्थ है-
(क) धूप करना (ख) वमन करना
(ग) जुलाब लेना (घ) दांतुन करना ( ग )

(c) 'वासासु' पद का अर्थ है-
(क) ग्रीष्मकाल में (ख) वर्षाकाल में
(ग) शीतकाल में (घ) प्रातःकाल में ( ख )

(d) 'अदरख' अर्थ को प्रकट करने वाला पद है-
(क) मूलए (ख) सिंगबेरे
(ग) उच्छुखंडे (घ) अनिव्वुडे ( ख )

(e) 'लगातार या निरन्तर चलने से भी रोग उत्पन्न हो सकता है', यह किस आगम में बताया है-
(क) ठाणांग सूत्र में (ख) दशाश्रुतस्कन्ध में
(ग)आचारांग सूत्र में (घ) अनुयोग द्वार सूत्र में ( क )

(f) 'अभी तुम्हारे पुण्य थोड़े शेष है। अतः गर्व मत करो।' यह कथन है-
(क) देवकी का (ख) कंस का
(ग) अतिमुक्त मुनि का (घ) उग्रसेन का ( ग )

(g) निम्नलिखित में जलचर का भेद नहीं है-
(क)कच्छप (ख) ग्राह
(ग) भैंस (घ) सुंसुमार ( ग )

(h) राग-द्वेष आदि की उत्पत्ति से लगने वाली क्रिया है-
(क) दिट्ठिया (ख) मिच्छादंसण वत्तिया
(ग) पाओसिया (घ) पाडुच्चिया ( घ )

(i) अन्यत्व भावना किसने भाई-
(क)अनाथी मुनि ने (ख) मृगापुत्र जी ने
(ग) शालिभद्रजी ने (घ) नमि राजर्षि ने ( ख )

(j) भिक्षाचर्या के भेद बताये गये हैं-
(क) 8 (ख) 9
(ग) 30 (घ) 13 ( ग )

(k) प्रायश्चित्त लेने वाले का गुण नहीं है-
(क) दान्त (ख) अपायदर्शी
(ग) अमायी (घ) अपश्चात्तापी ( ख )

(l) 'बीमार साधुओं की वैयावृत्य करना' किस विनय का भेद है-
(क) मन विनय (ख) वचन विनय
(ग) काय विनय (घ) लोकोपचार विनय ( घ )

(m) आपकी समवसरण जैसी विभूति को कौन धारण नहीं कर सकते-
(क) हरिहरादि देव (ख) भक्तजन
(ग) तारागण (घ) सैन्यजन ( क )

(n) 'भक्तामर-स्तोत्र' के रचनाकार का सूचक श्लोक है-
(क) 34 वाँ (ख) 37 वाँ
(ग) 48 वाँ (घ) 40 वाँ ( ग )

(o) ''आपके चरणों का आश्रय लेने वाले पुरुष पर भयानक सिंह भी आक्रमण नहीं कर सकता है।''इस भावार्थ को प्रकट करने वाला श्लोक है-
(क) रक्तेक्षणं समद कोकिलकण्ठनीलम्.....
(ख) कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह.....
(ग) कल्पान्तकाल पवनोद्धतवह्निकल्पम्.....
(घ) भिन्नेभकुम्भगल दुज्जवल शोणिताक्त ..... ( घ )

**प्र.2** निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) 'किमिच्छए' का अर्थ गृहस्थ से सावद्य प्रश्न करना है। ( नहीं )
(b) निर्ग्रन्थ पाँच इन्द्रियों को वश में रखने वाले अधीर होते हैं। ( नहीं )
(c) मोहरहित और जितेन्द्रिय महर्षि दुःखमुक्ति के लिए आत्म-साधना में अपनी शक्ति लगाते हैं। ( हाँ )
(d) 'तेगिच्छं' का अर्थ सावद्य-चिकित्सा करना नहीं है। ( नहीं )
(e) अनुयोग द्वार सूत्र में पूर्वानुपूर्वी आदि का विवेचन उपलब्ध है। ( हाँ )
(f) प्रतिरक्षा के लिए की जाने वाली हिंसा से भी प्रगाढ़ पाप कर्म का बंध होता है। ( नहीं )
(g) जीवरूपी तालाब में पानी रूपी कर्म, आश्रव रूपी नालों द्वारा आता है। ( नहीं )
(h) एक पर्याप्त की नेश्राय में असंख्यात अपर्याप्त उत्पन्न होते हैं। ( हाँ )
(i) जम्बूद्वीप के ऐरवत क्षेत्र की मर्यादा करने वाला शिखरी पर्वत है। ( हाँ )
(j) घी-तेल आदि के पात्र खुले रखने से लगने वाली क्रिया 'साहत्थिया' है। ( नहीं )
(k) उपधि ऊनोदरी के तीन भेद होते हैं। ( हाँ )
(l) अकल्पनीय आहार आदि आने पर उसे परठ देना विवेक प्रायश्चित्त कहलाता है। ( हाँ )
(m) जहाँ-जहाँ भगवान चरण रखते हैं, वहाँ-वहाँ देवगण कमलों की रचना नहीं करते हैं। ( नहीं )
(n) आपके नामरूप मंत्र का निरन्तर स्मरण करने से बेड़ियों से जकड़े हुए कैदी भी शीघ्र बंधन मुक्त हो जाते हैं। ( हाँ )
(o) आपके नाम का स्मरण करने से समुद्र में फँसे हुए जहाज में स्थित पुरुष भी आसानी से पार चले जाते हैं। ( हाँ )

**प्र.3** निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (a) | वत्थिकम्म | (क) आमंत्रणपूर्वक प्रदत्त आहार | मलशोधन के लिए तेल |
| (b) | नियाग | (ख) निदान | आमंत्रणपूर्वक प्रदत्त आहार |
| (c) | पंच निग्गहणा | (ग) मलशोधन के लिए तेल | धीरा |
| (d) | दशाश्रुत स्कन्ध | (घ) धीरा | निदान |
| (e) | पृथ्वीकाय | (च) सफेद | पीला |
| (f) | अप्काय | (छ) नीला | लाल |
| (g) | तेउकाय | (ज) लाल | सफेद |
| (h) | वायुकाय | (झ) पीला | नीला |
| (i) | भगवत् चरण कमल धूलि | (य) सभी भयों का नाश | जलोदर रोग का नाश |
| (j) | भक्तामर स्तोत्र का पाठ | (र) जलोदर रोग का नाश | सभी भयों का नाश |

**प्र.4** मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) सब दुःखों का नाश करने के लिए मैं सभी परीषह रूपी शत्रुओं का दमन करता हूँ। महर्षि/ निर्ग्रन्थ

(b) मुझे नींबू आदि में गलाये जाने पर जैन साधु ग्रहण कर सकते हैं। अचित्त नमक/लवण

(c) मुझमें मुनि कायिक चेष्टाओं को वश में रखकर समाधि भाव में लीन रहते हैं। वर्षाऋतु में

(d) मैं प्राकृत का वह शब्द हूँ, जिसका अर्थ अग्नि है। जोइणो

(e) मुझमें भिक्षाविधि का उल्लेख किया गया है। दशवैकालिक सूत्र/आचारांग सूत्र

(f) मैं 4 कारण से बोलता हूँ। प्रतिमाधारी/साधु

(g) मेरा दूसरा नाम 'वृत्तिसंक्षेप' है। भिक्षाचर्या

(h) मैंने आश्रव भावना भायी। समुद्रपाल

(i) मैं राग उत्पन्न करने से लगने वाली क्रिया हूँ। पेज्जवत्तिया

(j) मैं अन्तर्मुहूर्त में 12 योजन लम्बा हो जाता हूँ। असालिया

(k) मैं आत्मा को दुःखी बनाता हूँ। पापतत्त्व

(l) मेरा स्वभाव और संठाण नाना प्रकार के होते हैं। साधारण वनस्पति/ वनस्पति

(m) मेरी प्रभा चन्द्रमा के समान शीतल होती है। भामण्डल

(n) मुझको जो भी सुनता है, वह अपनी भाषा में सरलता से समझ लेता है। दिव्य ध्वनि

(o) मेरे द्वारा समुद्र में फँसे हुए जहाज में स्थित पुरुष भी आसानी से पार चले जाते हैं। भगवत् नाम स्मरण

**प्र.5** निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) कैसे निर्ग्रन्थ महर्षियों के लिए अनाचीर्ण कहे गए हैं ?

संयम में सुस्थित आत्मा वाले, बाह्य और आभ्यन्तर परिग्रह से मुक्त, षट्काय जीवों के रक्षक।

(b) निर्ग्रन्थों के विशिष्ट आचार के अन्तर्गत उनकी कोई 2 विशेषताएँ लिखिए।

1. पाँच आश्रवों के त्यागी, 2. तीन गुप्तियों से युक्त,
3. षट्काय जीवों की यतना करने वाले, 4. धीर और ऋजुदर्शी
5. पाँच इन्द्रियों को वश में रखने वाले। (नोटः- इनमें से कोई दो मान्य)

(c) अभिहडाणि, सन्निही, अनिव्वुडे, वमणे, इन चार शब्दों के अर्थ लिखिए।

अभिहडाणि- सामने लाकर दिया आहारादि
सन्निही- घृत-तेल आदि का संग्रह
अनिव्वुडे- बिना पका हुआ
वमणे- औषधि के द्वारा वमन

(d) निदान के कोई 2 रूप लिखिए।

नोटः- इनमें से कोई दो मान्य

1. कोई साधु किसी समृद्धिशाली पुरुष (चक्रवर्ती)को देखकर उसकी ऋद्धि प्राप्त करने के लिए निदान करता है।

2. कोई साध्वी, किसी ऋद्धिवन्त स्त्री (श्री देवी) को देखकर उसके सुख प्राप्त हेतु निदान करती है।

3. कोई साधु, पुरुषपना दुःखदायी है, अतः स्त्री बनने के लिए निदान करता है।

4. कोई साध्वी, स्त्रीपने की कठिनाई को देखकर पुरुष के सुखों को भोग करने के लिये निदान करती है।

5. कोई मनुष्य के काम-भोगों को अध्रुव, अशाश्वत व अनित्य समझकर देवरूप में उत्पन्न होने तथा दैवीय सुख भोगने के लिये निदान करते हैं।

6. देव भव में अपनी स्त्री को वश में करके या वैक्रिय रूप बनाकर सुख भोगने के लिए निदान करना।

7. देव भव में अपनी देवी के साथ सुख भोगने के लिए निदान करना।
8. अगले जन्म में श्रावक बनने हेतु निदान करना।
9. अगले जन्म में साधु बनने हेतु निदान करना।

(e) प्रत्येक वनस्पति के भेद कितने होते हैं ? नामोल्लेख कीजिए।
बारह भेद- रूक्खा (वृक्ष), गुच्छा, गुम्मा (गुल्म), लया, वल्ली, पव्वगा, तणा, वलया, हरिय (हरित), ओसहि (औषधि), जलरूहा, कुहणा।

(f) अणाभोगवत्तिया और सामन्तोवणिवाइया क्रियाओं को स्पष्ट कीजिए।
अणाभोगवत्तिया- बिना उपयोग के लापरवाही से लगने वाली क्रिया।
सामन्तोवणिवाइया - घी-तेल आदि के पात्र खुले रखने से लगने वाली क्रिया।

(g) स्वाध्याय के प्रथम चार भेद समझाइए।
1. वायणा (वाचना)- गुरु से सूत्र अर्थ पढ़ना,
2. पडिपुच्छणा (प्रतिपृच्छना)-शंका समाधान के लिए अथवा विशेष निर्णय के लिए प्रश्न करना।
3. परियट्टणा (परिवर्तना)- सीखे हुए ज्ञान को बार-बार फेरना।
4. अणुप्पेहा (अनुप्रेक्षा)- सीखे हुए सूत्रादि ज्ञान का मनन-चिन्तन करना।

(h) गाढं.....स्मरन्तः। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
गाढ़ बृहन्निगडकोटि-निघृष्टजंघाः।
त्वान्नममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः।

(i) कल्पान्तकाल.....सम्मुखमापतन्तम्।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
कल्पान्तकाल-पवनोद्धत-वह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं।

**प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : -** **9x3 = (27)**

(a) खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडे। गाथा का भावार्थ लिखिए।
अवशेष कर्मों को खपाने के लिए वे देवलोक से आकर मनुष्य भव धारण करते हैं, जहाँ संयम और तप से संचित कर्मों का क्षय करके सिद्धि मार्ग पर चलते हुए, जीव मात्र के रक्षक मुनि अन्त में निराबाध सुख की प्राप्ति करते हैं।

(b) गिहिणो वेयावडियं, जा य आजीव वत्तिया।
तत्ता निव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य। गाथा का भावार्थ लिखिए।
जैन निर्ग्रन्थ धैर्यवान् और निस्पृह होता है। वह गृहस्थ से सेवा नहीं लेता, क्योंकि उसका जीवन स्वाश्रयी है। अपने कुल आदि का परिचय देकर भिक्षा नहीं लेता, मिश्रजल का उपयोग और रुग्णावस्था में परिजनों का स्मरण भी नहीं करता, क्योंकि उसको राग-विजय करना है।

(c) आयावयंति.....सुसमाहिया।। गाथा को पूर्ण कर उसका भावार्थ लिखिए।
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा।
वासुसु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया।।
भावार्थ-मुनि ग्रीष्मकाल में सूर्य की आतापना लेते हैं, शीतकाल में खुले बदन शीत सहन करते हैं और वर्षा ऋतु में कायिक चेष्टाओं को वश में रखकर समाधि भाव में लीन रहते हैं।

(d) सोमिल पर गजसुकुमाल मुनि को द्वेष नहीं आया और कृष्णमहाराज को द्वेष आ गया। इसका क्या कारण है?
गजसुकुमाल मुनि ने शरीरादि का राग छोड़ दिया था, इसलिए उन्हें सोमिल पर द्वेष नहीं आया, किन्तु कृष्ण महाराज का गजसुकुमाल मुनि पर राग था, इसलिए सोमिल पर द्वेष जागृत हो गया।

(e) जैन-धर्म में किस निक्षेप की प्रधानता है तथा वह किसे वन्दनीय मानता है ?

जैन धर्म में भाव निक्षेप मुख्य है। भाव निक्षेप जिसमें मिले, उसी नाम, स्थापना एवं द्रव्य निक्षेप वालों को जैन धर्म वन्दनीय मानता है।

(f) मोक्षतत्त्व के अल्प बहुत्व द्वार को समझाइए।

सबसे थोड़े नपुंसक लिंग सिद्ध हैं। स्त्रीलिंग सिद्ध उससे संख्यात गुणा अधिक है और उनसे भी पुरुष लिंग सिद्ध संख्यात गुणा है। कारण यह है कि नपुंसक लिंग वाले एक समय में उत्कृष्ट दस मोक्ष जा सकते हैं। स्त्रीलिंग से एक समय में उत्कृष्ट बीस और पुरुष लिंग से एक समय में 108 मोक्ष जा सकते हैं।

(g) भाव व्युत्सर्ग के चार भेद स्पष्ट कीजिए।

1. कषाय व्युत्सर्ग- क्रोध, मान, माया, लोभ रूप चार कषाय का त्याग करना।

2. योग व्युत्सर्ग- मन, वचन, काया के योगों का त्याग करना।

3. कर्म व्युत्सर्ग- ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों के बंध के कारणों का त्याग करना। आठ कर्मों के भेद से कर्म व्युत्सर्ग के भी आठ भेद होते हैं।

4. संसार व्युत्सर्ग- नरकायु आदि के कारण रूप मिथ्यात्व आदि का त्याग करना।

(h) प्रतिसंलीनता की परिभाषा लिखते हुए भेदों का नामोल्लेख कीजिए।

प्रतिसंलीनता का अर्थ है-गोपन करना। इन्द्रिय, कषाय और योगों की अशुभ प्रवृत्तियों से आत्म-गुणों की रक्षा करना प्रतिसंलीनता तप है।

भेद- इन्द्रिय प्रतिसंलीनता, कषाय प्रतिसंलीनता, योग प्रतिसंलीनता, विविक्त शयनासन सेवनता।

(i) पुण्यकर्म की 42 प्रकृतियों के नाम लिखिए।

वेदनीयकर्म के उदय से एक- साता वेदनीय। आयु कर्म के उदय से तीन-देवायु, मनुष्यायु, तिर्यंचायु। गोत्रकर्म के उदय से एक-उच्च गोत्र। नाम कर्म के उदय से 37 -1. मनुष्य गति, 2. देव गति, 3. पंचेन्द्रिय जाति, 4-8. पाँच शरीर-औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस्, कार्मण, 9-11. तीन अंगोपांग-औदारिक, वैक्रिय, आहारक, 12. वज्र ऋषभनाराच संहनन, 13. समचतुरस्र संस्थान, 14. शुभ वर्ण, 15. शुभ गंध, 16. शुभ रस, 17. शुभ स्पर्श, 18-19. दो आनुपूर्वी-देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, 20. शुभविहायोगति, 21-30. त्रस दशक-त्रस नाम, बादर नाम, पर्याप्त नाम, प्रत्येक नाम, स्थिर नाम, शुभ नाम, सुभग नाम, सुस्वर नाम, आदेय नाम, यशःकीर्ति नाम, 31. अगुरुलघुनाम, 32. पराघात नाम, 33.आतप नाम, 34. उद्योत नाम, 35. श्वासोच्छ्वास नाम, 36. निर्माण नाम, 37. तीर्थंकर नाम। इस प्रकार 1+3+1+37 कुल 42 पुण्य प्रकृतियाँ।